पत्थर की बेंच

चंद्रकांत देवताले

श्री चंद्रकांत देवताले पुरानी पीढ़ी के अग्रणी कवि है। उन्होंने अपने कविताओं से वर्तमान सामाज और परिवेश की विद्रूपताओं पर प्रहार करने का सफल प्रयास किया है। वर्तमान पीढ़ी की पुकार को देवताले ने वाणी देते हुए देवताले जी की कविता पत्थर की बेंच....

सारांश:-

पुरानी पीढ़ी के अग्रणी कवि एवं समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर श्री चंद्रकांत देवताले की छोटी कविता है पत्थर की बेंच। इस कविता वर्तमान पीढ़ी की पुकार को वाणी देने ता सफल प्रयास किया गया है।

एक पार्क में पत्थर से बनाया हुआ एक बेंच खड़ा है। उस पार्क में सभी पीढ़ियों के लोग आते-जाते हैं।

बेंच पर बैठकर एक बच्चा रोते हुए बिस्कुट खा रहे है। एक थका युवक वहाँ बैठे है, वह अपने कुचले हुए स्वप्नों को सहला रहे हैं। एक रिटायर्ड बूढ़ा, दोपहर में वहाँ बैठकर हाथों से आँखें ढ़ाँपकर सो रहे हैं। दो व्यक्तियाँ, चाहे प्रेमी-प्रेमिका हो या पति-पत्नी, ज़िंदगी के सपने बुना रहे है।

वर्षों पुराना बेंच पर आँसू, थकान, विश्राम और प्रेम की स्मृतियाँ अंकित है।

बच्चे से बूढ़े तक, सभी पीढ़ी के लोग अपने सुख-दुःख में इस बेंच का सहारा लिया है। वर्षों पुरानी यादें उस पर अंकित है। कवि की आशंका यह हैं कि इस केलिए भी एक दिन हत्याओं की परंपरा शुरु हो सकता है। स्वार्थता से मानव इसे उखाड़ कर ले जाए या तोड़ दें। यह बेंच कब बनी, किसने बनवाई, इसके इतिहास क्या है, कौन इस पर पहली बार बैठा होगा आदि बातें अब भी अज्ञात है।

इसमें कवि लोगों को आश्रय देनेवाले एक पत्थर की बेंच का चित्र खींचता हैं। सार्वजनिक पार्क में स्थित यह बेंच वहाँ आनेवाले सभी लोगों का आश्रय रहा। मन के भार को हल्का करके थोड़ा सुख-शांती पाने केलिए ही लोग ऐसे सार्वजनिक स्थानों पर आते हैं।

अनुवर्ती कार्य:-

(1) 'पत्थर की बेंच' कविता पर आस्वादन टिप्पणी लिखें।

पुरानी पीढ़ी के अग्रणी कवि श्री चंद्रकांत देवताले की प्रसिद्ध कविता है 'पत्थर की बेंच'। इनकी कविताओं में एक ओर मानवीय संवेदनाओं की आवाज़ है तो दूसरी ओर वर्तमान सामाजिक विद्रूपताओं पर कठोर प्रहार भी किया है। प्रस्तुत कविता में इन्होंने वर्तमान पीढ़ी की पुकार को वाणी दी है।

'पत्थर की बेंच' कविता में एक पार्क की वर्षों पुरानी बेंच का चित्रण हुआ है। उस बेंच पर अनेक लोग, विभिन्न भावनाओं वाले लोग आकर बैठते है। इन में बच्चे, युवा, बूढ़ा आदि है।

बेंच पर एक रोता हुआ बच्चा बिस्कुट कुतरते हुए बैठती है। धीरे-धीरे उसका रोना बंद हो गया है। एक थका युवक अपनी थकावट को दूर करने केलिए वहाँ बैठी है। वह अपने कुचले हुए सपनों को सहला रहा है। एक रिटायर्ड बूढ़ा दोपहर में इस बेंच पर बैठकर अपने हाथों से आँखें ढाँपकर सो रहे है। वहाँ दो व्यक्ति, चाहे पति-पत्नी हो या प्रेमी-प्रेमिका, ज़िंदगी के सपने बुन रहे है। जिसमें बैठकर सब व्यक्तियों को ज़रा आश्वास भी मिलता है। कवि कहते है कि वह पत्थर की बेंच वर्षों पुराना है, जो सुख-दुख, प्रेम, थकान-आराम आदि का साक्षी है।

यह बेंच कब बनी, किसने बनी आदि बातें अब भी अज्ञात है। लेकिन समाज के सभी पीढ़ी के लोगों के सुख-दुखों में आश्रय और आश्वास देते हुए बेंच वहाँ खड़ा है।

लेकिन अब कवि को इस बेंच की अस्तित्व पर आशंका है। पुरानी मान्यताएँ मिट जानेवाले आज के युग में कभी इसे भी उखाड़ दिया जाएगा। बिना किसी कारण से लड़ाई चले जानेवाले

युग है अब हमारे सामने। इस पत्थर की बेंच केलिए भी एक दिन लडाई शुरु हो सकता है। इसे भी उखाड़कर यहाँ से ले जाने की या तोड़ने के दिन सामने है। उनको भी पता नहीं होगा कि कौन इस पर पहली बार बैठा होगा।

इस कविता में कवि एक पत्थर की वर्णन किया है, जिसे अनेक लोगों ने सहारा लिया है। लोगों को सुख एवं शांति प्रदान करनेवाले ऐसे पार्क और पत्थर की बेंच सामाजिकता का संगम स्थान है। लेकिन आज के विकराल समय में स्वार्थी मानव ने स्वार्थता के कारण ऐसी सामाजिक जगहों पर भी हमला कर रहे है। सरल भाषा में कवि ने अपनी कविता में यही चित्रण किया है।

कवितांश पढ़ें और उत्तर लिखें।

HSSLiVE.IN

(1) पत्थर की बेंच .....की स्मृतियाँ।

(1) **पत्थर की बेंच पर कौन-कौन बैठे है? उनकी संवेदनाएँ क्या-क्या हैं?**

पत्थर की बेंच पर एक रोता हुआ बच्चा बिस्कुट कुतरता हुआ बैठता है। एक युवक थकान को मिटाने केलिए, अपने कुचले हुए सपनों को सहलाते हुए बैठता है। एक रिटायर्ड **बूढ़ा** दोपहर में अपने हाथों से **आँखें** ढाँपकर, थोडा आराम केलिए बैठा है। दो व्यक्ति, चाहे पति-पत्नी हो या प्रेमी-प्रेमिका, ज़िंदगी के सपनें बुनाकर बैठी है।

(2) पत्थर की बेंच पर सबसे पहले कौन बैठा? वह क्या कर रहे थे?

पत्थर की बेंच पर सबसे पहले एक बच्चा बैठा। वह रो रहा था। वह बिस्कुट कुतरते-कुतरते चुप हो रहा है।

(3) थका युवक क्या कर रहा है?

थका युवक अपने कुचले हुए सपनों को सहला रहा है।

(4) रिटायर्ड बूढ़ा क्या कर रहा है?

रिटायर्ड बूढ़ा दोपहर में अपने हाथों से आँखें ढ़ाँपकर सो रहा है। वह थोड़ा आराम केलिए वहाँ बैठा है।

(5) पत्थर की बेंच पर बैठकर वे दोनों क्या कर रहे हैं?

पत्थर की बेंच पर बैठकर वे दोनों जिंदगी के सपने बुन रहे हैं।

(6) पत्थर की बेंच पर क्या-क्या अंकित है?

पत्थर की बेंच पर आँसू, थकान, आराम और प्रेम की स्मृतियाँ अंकित है।

(7) सबों ने पत्थर की बेंच का सहारा लिया, क्यों?

पार्क सामाजिकता का संगम स्थान है। वहाँ अनेक लोग आते-जाते है। पत्थर की बेंच पर बैठने से लोगों को थोड़ा आश्वास मिलता है। थकान दूर होकर आराम मिलते हैं। खुली जगह पर पड़ी पत्थर की बेंच पर बैठकर शुद्ध हवा खाने से मन का बोझ दूर हो जोते हैं। इसलिए सबों ने पत्थर की बेंच का सहारा लिया।

HSSLiVE.IN

(2) इस पत्थर की ..... बेंच पर।

(1) कवि क्यों आशंकित है?

कवि को संदेह था यदि एक दिन इस पत्थर की बेंच केलिए भी हत्याओं का परंपरा शुरु हो सकता होगा।

(2) हत्याएँ शुरु होने के बाद पत्थर की बेंच की स्थिति क्या हो सकता है?

पत्थर की बेंच को उखाड़कर ले जाएगा या उसे तोड़ा भी जा सकता है।

(3) पत्थर की बेंच किसका प्रतीक हैं?

इनसानियत एवं सामाजिकता का प्रतीक हैं।

जीवन-वृत्त पढ़ें:-

नाम	: चंद्रकांत देवताले
जन्म	: 7 नवंबर 1936, बैतूर जिला, मध्यप्रदेश
रचनाएँ	: हड्डियाँ में छिपा स्वर, दीवारों पर खून से, उसके सपने आदि
विशेषताएँ	: पुरानी पीढ़ी के अग्रणी कवि समकालीन कविता का सशक्त हस्ताक्षर नूतन विचारधारा के वाहक
देन	: कविता में पीढ़ियों का सुख-दु:ख, प्रेम एवं विरह की संवेदनशील स्मृतियाँ और भविष्य की आशंकाओं का अंकन
पुरस्कार	: मुक्तिबोध फैलोशिप, सृजन भारती सम्मान, कविता समय सम्मान

चंद्रकांत देवताले

पुरानी पीढ़ी के अग्रणी कवि श्री चंद्रकांत देवताले का जन्म 7 नवंबर 1936 को मध्यप्रदेश के बैतूर जिले में हुआ। उन्होंने समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर एवं नवीन विचारधारा के वाहक भी हैं। कविता में पीढ़ियों का सुख-दुख, प्रेम एवं विरह की संवेदनशील स्मृतियाँ और भविष्य की आशंकाओं का अंकन आदि आपकी देन है। हड्डियाँ में छिपा स्वर, दीवारों पर खून से, उसके सपने आदि आपके रचनाएँ है। मुक्तिबोध फैलोशिप, सृजन भारती सम्मान, कविता समय सम्मान आदि पुरस्कारों से वे सम्मानित है।

परीक्षा केंद्रित कुछ और प्रश्न:-

(1) पत्थर की बेंच पर बैठकर वह थका युवक अपने कुचले हुए सपनों के बारे में डायरी लिखता है। डायरी कै वह पन्ना तैयार करें।

(2) बेंच पर बैठे वे दोनों, ज़िंदगी के सपने बुन रहे हैं। उन दोनों का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(3) अपने गाँव के एक सार्वजनिक पार्क की दुःस्थिति के बारे में सुमेष अपने दोस्त से बताती है। उन दोनों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

****